अध्याय 29

भेंट संबंधी विधियां (भाग 2)

अध्याय 28 में प्रारंभ की गई बलिदान से संबंधित विधियां अध्याय 29 में समाप्त होती हैं। वार्षिक पर्व में बलिदान से संबंधित विधियां फसह और अखमीरी रोटी के पर्व के निर्देश के साथ प्रथम महीने में प्रारंभ होती हैं (28:16-25) और सात हफ्ते पश्चात, सप्ताह के पर्व (कटनी का पर्व) से संबंधित विधियों तक जारी रहती हैं (28:26-31)। यह अध्याय इस श्रृंखला को वर्ष के सातवें महीने के दौरान मनाए जाने वाले पर्व में चढ़ाए जाने वाले बलिदान को पूरा करता है: प्रथम दिन, नरसिंगे के पर्व के लिए (29:1-6); दसवें दिन, प्रायश्चित्त के दिन के लिए (29:7-11); और पन्द्रहवें दिन से महीने के आखिर तक, झोपड़ियों के पर्व के लिए (29:12-38)। इन बलिदानों की अपेक्षाएं पूरी करने के पश्चात, यह अध्याय उन बलिदानों का विश्लेषण करता है जिसे इस्राएली लोग अन्य अवसरों पर व्यक्तिगत रूप से चढ़ाते थे (29:39, 40)।

वार्षिक बलिदान (क्रमश) (29:1-38)

तुरहियों का पर्व (29:1-6)

1"फिर सातवें महीने के पहले दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; उसमें परिश्रम का कोई काम न करना। वह तुम्हारे लिये जयजयकार का नरसिंगा फूँकने का दिन ठहरा है; 2तुम होमबलि चढ़ाना, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के नर बच्चे; 3और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवाँ अंश, 4और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना। 5और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिससे तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो। 6इन सभों से अधिक नए चाँद का होमबलि और उसका अन्नबलि, और नित्य होमबलि और उसका अन्नबलि, और उन सभों के अर्घ भी उनके नियम के अनुसार सुखदायक सुगन्ध देने के लिये यहोवा का हव्य करके चढ़ाना।"

आयत 1. सातवें महीने के पहले दिन, इस्राएलियों को **पवित्र सभा** बुलाकर और **परिश्रम का कोई काम न कर करके**, तुरहियों का पर्व मनाना था। सातवाँ महीना जो बाबूल के अनुसार तीसरी कहलाता है, सितम्बर/अक्तूबर महीने के समतुल्य था। पर्व को **तुरहियां फुँककर** चिन्हित किया जाना चाहिए था। सभी निर्धारित पर्वों एवं नए चांद के दिन, तुरहियां फूँका जाना चाहिए था (10:10)। यद्यपि, इस दिन, तुरहियां फूंकने को विशेष महत्व दिया गया है (लैव्य. 23:23-25)।

आयत 2. यहोवा के लिए सुखदायक सुगन्ध के रूप में **होमबलि** चढ़ाकर इस दिन को स्मरणीय बनाना चाहिए था। इसके लिए **एक बैल, एक मेढ़ा, और सात नर भेड़ों** की आवश्यकता थी। **एक-एक वर्ष** के **निर्दोष** भेड़ होने चाहिए थे।

आयतें 3, 4. इन जानवरों को निर्धारित **अन्नबलि** के साथ बलिदान किया जाना चाहिए था। **तेल से सने मैदे** की निर्धारित मात्रा के साथ बैल, मेढ़ा, **और** हर **एक नर भेड़** को बलिदान करना था।

आयतें 5, 6. इस दिन के लिए अपेक्षित होमबलि में पापबलि होना चाहिए था जिसमें **एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिससे ... प्रायश्चित्त हो। नए चाँद का होमबलि** और नित्य और मासिक बलिदान जिसका पहले वर्णन किया गया है, के अतिरिक्त यह **बलिदान** किया जाना चाहिए था।

सार्वजनिक कैलंडर के प्रथम दिन में आने वाला तुरहियों का पर्व, यहूदियों के नव वर्ष के दिन को रोश हसन्नाह के नाम से जाना जाने लगा। "रोश हसन्नाह" का अर्थ "वर्ष का माथा (या प्रथम)।"

प्रायश्चित्त के दिन (29:7-11)

7"फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; तुम अपने अपने प्राण को दुःख देना, और किसी प्रकार का काम-काज न करना, 8और यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देने को होमबलि; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक एक वर्ष के सात भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; फिर ये सब निर्दोष हों; 9और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवाँ अंश, 10और सातों भेड़ के बच्चों में से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना। 11और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये सब प्रायश्चित्त के पापबलि और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि के, और उन सभों के अर्घों के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

आयत 7. सातवें महीने के दसवें दिन, इस्राएलियों ने प्रायश्चित्त का दिन, जो योम किप्पूर, जिसका अर्थ "ढाँकने का दिन," के नाम से जाना जाता था, मनाया करते थे। प्रायश्चित्त में पाप "ढाँकना" संलग्न है। उस दिन महायाजक का बलिदान पूरे देश के लिए प्रायश्चित्त का कार्य करता था। प्रायश्चित्त के दिन से संबंधित निर्देश का विस्तृत विवरण लैव्यव्यवस्था 16 में पाया जाता है। इस अवसर पर, लोगों को

पवित्र सभा बुलाना था। उनको अपने प्राणों को दुःख देना था और परिश्रम का **कार्य नहीं करना** था (लैव्य. 23:26-32)। कुछ पाठों में, अपने आपको "दुःख देने" की तुलना "उपवास" से की गई है (भजन 35:13; यशा. 58:3, 5)। यदि यहाँ इसका यही अर्थ है तो प्रायश्चित्त का दिन ही केवल एक ऐसा दिन था जिसमें इस्राएलियों से उपवास रखने की अपेक्षा की जाती थी।

आयतें 8-11. इस्राएल देश को एक **होमबलि**, जिसमें **एक** बैल, **एक मेढ़ा, और सात नर भेड़** होने चाहिए था, को निर्धारित **अन्नबलि** और **पापबलि**, जिसमें **एक बकरा** भी चढ़ाया जाता था, के साथ बलिदान करना था।

ये बलिदान नित्य बलिदानों और महायाजक द्वारा चढ़ाया जाने वाला **प्रायश्चित्त** के लिए **पापबलि**, के अतिरिक्त बलिदान किया जाना चाहिए था (लैव्य. 16)।

झोपड़ियों का पर्व (29:12-38)

12"फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उसमें परिश्रम का कोई काम न करना, और सात दिन तक यहोवा के लिये पर्व मानना; 13तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये हव्य करके चढ़ाना; अर्थात् तेरह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह भेड़ के नर बच्चे; ये सब निर्दोष हों; 14और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् तेरहों बछड़ों में से एक एक बछड़े के पीछे एपा का तीन दसवाँ अंश, और दोनों मेढ़ों में से एक एक मेढ़े के पीछे एपा का दो दसवाँ अंश, 15और चौदहों भेड़ के बच्चों में से एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना। 16और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

17"फिर दूसरे दिन बारह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; 18और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। 19और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

20"फिर तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; 21और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। 22और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

23"फिर चौथे दिन दस बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; 24बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। 25और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके

अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

[26]"फिर पाँचवें दिन नौ बछड़े, दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; [27]और बछड़ों, मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। [28]और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

[29]"फिर छठवें दिन आठ बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; [30]और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। [31]और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

[32]"फिर सातवें दिन सात बछड़े, और दो मेढ़े, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; [33]और बछड़ों, और मेढ़ों और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। [34]और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

[35]"फिर आठवें दिन तुम्हारी एक महासभा हो; उसमें परिश्रम का कोई काम न करना, [36]और उसमें होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये हव्य करके चढ़ाना; वह एक बछड़े, और एक मेढ़े, और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के नर बच्चों का हो; [37]बछड़े, और मेढ़े, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना। [38]और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढ़ाए जाएँ।"

आयत 12. "झोपड़ी" या "तम्बू" से झोपड़ियों के पर्व का नामकरण हुआ है, जिसमें इस्राएली लोग अपने जंगल की यात्रा का संस्मरण करने के लिए **सात दिनों तक** रहते थे। एक हफ्ते तक अस्थाई डेरे में वास करने के पश्चात, वे यह स्मरण करते थे कि किस प्रकार परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के लिए भूतकाल में उपाय किया था। इसके साथ ही, वर्तमान में प्रतिज्ञा की देश की आशीषों के लिए भी वही जिम्मेदार है, को वे समझेंगे (देखें व्यव. 8:1-20)।

इस अध्याय में इस **पर्व** का नामकरण नहीं हुआ है लेकिन यह निर्गमन 23:16 में "वर्ष के अन्त में ... बटोरन का पर्व" और लैव्यव्यवस्था 23:34 और व्यवस्थाविवरण 16:13; 31:10 में "झोपड़ियों का पर्व" कहा गया है। फसलों की कटनी की समाप्ति पर यह उत्सव का कारण भी था। यह खेती से प्राप्त की गई ईश्वरीय आशीषों से मिली प्रसन्नता का प्रतिबिंब भी था।[1] पर्व **सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को ... पवित्र सभा** के साथ प्रारंभ होता था। लोगों को कोई भी **परिश्रम का काम नहीं** करना था जबकि पर्व सात दिनों तक मनाया जाता था। आठवें दिन (महीने के बाईसवें दिन) इसकी समाप्ति होती थी।

आयतें 13-16. पर्व के दौरान हर दिन चढ़ाए जाने वाले बलिदानों के बारे में निर्देश इन आयतों में दिए गए हैं। पर्व के प्रथम दिन (सातवें महीने के पंद्रहवें दिन) इस्राएलियों को **तेरह** बैल, **दो** मेढ़ा, और **चौदह** नर **भेड़ों** (**अन्नबलि** और **अर्घ** के साथ) की होमबलि हव्य करके चढ़ाना था। जबकि आयत 14 में केवल "अन्नबलि" को स्पष्ट किया गया है, अर्घ के बारे में 29:18, 21, 24, 27, 30, 33, 37 में वर्णन किया गया है। नित्य **होमबलि** के अलावा इस्राएलियों को **एक बकरे को पापबलि** करके हव्य करके चढ़ाना था।

आयतें 17-32. इसके पश्चात, हर दिन के बलिदान का स्पष्टीकरण किया गया है। बलिदान किए जाने वाले जानवरों की संख्या नहीं बदली गई थी जबकि बलिदान किए जाने वाले बैलों की संख्या घटती गई। **दूसरे दिन**, **बारह** बैल (29:17), **तीसरे दिन**, **ग्यारह** बैल (29:20), **चौथे दिन**, **दस** बैल (29:23), **पाँचवें दिन**, **नौ** बैल (29:26), **छटे दिन**, **आठ** बैल (29:29), और **सातवें दिन**, **सात** बैल (29:32) उनको बलिदान करना था।

आयतें 33, 34. इन सभी जानवरों को **उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना** था। **... पापबलि के लिए एक ...** अतिरिक्त बकरे की आवश्यकता थी। इस अवसर पर **नित्य होमबलि** के अतिरिक्त ये बलिदान किए जाने थे।

आयतें 35-38. पर्व का समापन **आठवें दिन** एक **महासभा** के साथ किया जाना चाहिए था और उस दिन लोगों को कोई भी **परिश्रम का काम** नहीं करना था। यद्यपि, **होमबलि**, एक बकरे की पापबलि के साथ, फिर से चढ़ाया जाना चाहिए था: **एक बैल, एक मेढ़ा,** और **सात नर भेड़**, उनके **अन्नबलि** और **अर्घ** के साथ हव्य करके चढ़ाना था। ये बलिदान, नित्य चढ़ाए जाने वाले बलिदान के अतिरिक्त चढ़ाया जाना चाहिए था।

सारांश (29:39, 40)

39"अपनी मन्नतों और स्वेच्छाबलियों के अलावा, अपने अपने नियत समयों में, ये ही होमबलि, अन्नबलि, अर्घ, और मेलबलि, यहोवा के लिये चढ़ाना।" 40यह सारी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी, जो उसने इस्राएलियों को सुनाई।

आयत 39. अंतिम वक्तव्य यह बताता है कि अपेक्षित बलिदान इस्राएलियों द्वारा नियुक्त समय पर चढ़ाया जाने वाला बलिदानों के अतिरिक्त बलिदान था। उसको अपनी **मन्नतें** और **स्वेच्छाबलि, होमबलि, अन्नबलि, अर्घ, और मेलबलि** के साथ जारी रखना था।

आयत 40. मूसा ने **इस्राएलियों** को बलिदान से संबंधित **सारी आज्ञा जिसे यहोवा** ने उसे दिया था, कह सुनाया। "कुल मिलाकर, इन पर्वों में बलिदान चढ़ाने की जो आज्ञा दी गई थी उसमें 1071 भेड़ें, 113 बैल, 37 मेंढ़े, 30 बकरे, 112 बुशेल मैदा, लगभग 370 गैलन तेल, और लगभग 340 गैलन मदिरा था।"[2] यहोवा

को चढ़ाए जाने वाला हर एक परिवार की व्यक्तिगत मन्नतें इन बलिदानों के अतिरिक्त था। अनगिनत बलिदानों में उदार समृद्धि अंतर्निहित था, जिसका इस्राएली लोग प्रतिज्ञा की देश में आनंद लेने वाले थे। ताकि यह नई पीढ़ी परमेश्वर की भरपूर पूर्ति के द्वारा उत्साहित किए जाएं।[3]

अनुप्रयोग

बलिदानों की महत्वत्ता (अध्याय 28; 29)

गिनती 28 और 29 में इस्राएल देश को दिए गए बलिदान की महत्वत्ता, प्रतिज्ञा की देश, जिसमें वे शीघ्र प्रवेश करने वाले थे, इस्राएलियों की जीवन के तीन तथ्यों पर रोशनी डालती है।

सर्वप्रथम, परमेश्वर अपने लोगों को प्रतिज्ञा का देश देगा और वहाँ वे सर्वसम्पन्न होंगे। उस देश में जिस मात्रा में बलिदान चढ़ाया जाएगा वह इस बात की गवाही देता है कि परमेश्वर जानता था कि इस्राएली लोग भविष्य में अत्यधिक पशु धन और अनाज पैदा करेंगे।

द्वितीय, परमेश्वर चाहता था कि उसको चढ़ाए जाने वाली आराधना और बलिदान, उसके लोगों का केन्द्रीय उद्देश्य होना चाहिए था। हर दिन, हर हफ्ते, हर महीने, और वर्ष में कई बार, परमेश्वर के लोगों को यह स्मरण दिलाया जाना चाहिए कि उसने उनके लिए क्या किया है और उनको उसके प्रति कितना समर्पित होना चाहिए। जेकब मिलग्रोम ने अनुमान लगाया कि साप्ताहिक सब्त मनाने के अलावा, इस्राएल का धार्मिक कैलंडर, परमेश्वर के लोगों से यह अपेक्षा करता है कि उनको तीस दिन उसकी सेवा में अपना जीवन समर्पण करना था।[4] यदि यह अनुमान ठीक है तो तीस दिन और बावन सब्त, कुल मिलाकर वर्ष के बयासी दिन को परमेश्वर की सेवा में समर्पण कर देना चाहिए था। दूसरे शब्दों में, इस्राएलियों के लिए हर चौथा दिन आराधना का दिन या यहोवा के लिए अलग किया गया दिन था।

तृतीय, परमेश्वर का प्रकाशन यह अपेक्षा करता है कि उसके लोग सामूहिक रूप से उसकी आराधना करें। व्यक्तिगत बलिदान पापों की क्षमा और धन्यवाद की अभिव्यक्ति के लिए अपेक्षित था, लेकिन केवल यही व्यवस्था की मांग नहीं थी। सभी परमेश्वर के लोगों को नित्य, बार-बार, और उदारता से बलिदान चढ़ाना था। यद्यपि इस्राएली लोगों का परमेश्वर की आराधना की मांग व्यक्तिगत सम्मति थी, लेकिन यह व्यक्तिपरक नहीं था; यह समूह का धर्म था।

समाप्ति नोट

[1]ब्रैंट ली डोटी, *द बुक आफ गिनती*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जॉप्लीन, मिसूरीः कॉलेज प्रेस, 1973), 319. [2]उपरोक्त। [3]डेन्नीस टी. ओल्सन, *गिनती*, इंटरप्रेटेशन (लुईविलः जॉन नॉक्स प्रेस, 1996), 173. [4]जेकब मिलग्रोम, *गिनती*, द जेपीएस तोरह कमेंट्री (फिलाडेल्फियाः ज्यूविश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1990), 237.